CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईसाई धर्म क्या कहता है ?

वि०
१२८

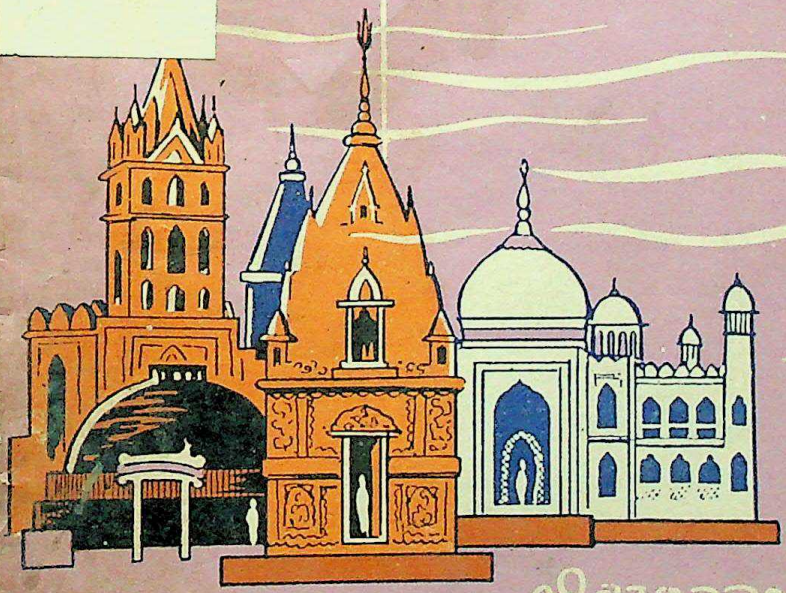

श्रीकृष्ण दत्त भट्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईसाई धर्म क्या कहता है ?

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक : मन्त्री, सर्व सेवा संघ,
राजघाट, वाराणसी

संस्करण : प्रथम : दिसम्बर, १९६३ : ३,०००
द्वितीय : फरवरी, १९६५ : ५,०००

कुल प्रतियाँ : ८,०००

मुद्रक : नरेन्द्र भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी

मूल्य : ६० पैसे

Title : ISAI DHARMA KYA KAHATA HAI ?
Author : Shrikrishna Datta Bhatta
Subject : Religion
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi
Edition : Second
Copies : 5,000, February, '65
Total Copies : 8,000
Price : 60 Paise

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशकीय

प्रेमके साक्षात् प्रतीक थे प्रभु ईसा।

"जो तुम्हारा दुश्मन है, उसे भी तुम प्यार करो। जो तुम्हारे दाहिने गालपर चाँटा लगाये, उसके सामने तुम अपना बायाँ गाल भी कर दो। जो तुमपर हमला करे, उसे भी तुम आशीर्वाद दो!"—यह है प्रभु ईसाका सन्देश।

"जो रोगी हैं, बीमार हैं, दुखी हैं, पीड़ित हैं, कोढ़ी हैं, उनकी सेवा करो। अनाथों और विधवाओंकी सहायता करो। खुले हाथसे तुम्हें मिला है, खुले हाथसे लुटाओ!" —यह है प्रभु ईसाका आदेश।

ईसाई धर्मका परिचय देनेवाली और प्रभु ईसाका, बाइबिलका और ईसाई सन्तोंका सन्देश सुनानेवाली यह पुस्तिका प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। हमारी 'धर्म क्या कहता है?' पुस्तक-मालाकी यह दसवीं पुस्तक है। इसके पहलेकी पुस्तकोंमें वैदिक, जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, ताओ और कनफ्यूश धर्मोंका परिचय दिया गया है। इसके बादकी पुस्तकोंमें इसलाम और सिखधर्म का परिचय दिया गया है।

हम मानते हैं कि सभी धर्मोंके मूलमें बहनेवाली सत्य, प्रेम और करुणाकी त्रिवेणीमें जो स्नान करेगा, उसका कल्याण हुए बिना न रहेगा।

●

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुक्रम

१. ईसाई धर्म ५–१४
२. प्रभु ईसा १५–२७
३. बाइबिल में कहा है २८–५५

१. स्वर्गका राज्य उन्हें मिलेगा २८, २. भलाईसे बुराई जीतो २९, ३. दुश्मनको प्यार करो ३०, ४. निकाल दो वह आँख ३२, ५. दीपक जलता रखो ३३, ६. पहला पत्थर वह मारे ! ३४, ७. विश्वासः फलदायकः ३५, ८. पति-पत्नी एक होकर रहें ३७, ९. लुटा दो दौलतको बेकसोंमें ३८, १०. पड़ोसीसे प्रेम करो ३९, ११. बीमारोंकी सेवा करो ४०, १२. अपने लिए धन न बटोरो ४१, १३. गरीबका दान ४२, १४. पीछेवालेसे देना शुरू करो ४३, १५. प्याला भीतरसे भी धोओ ४५, १६. दिखावा मत करो ४६, १७. सच्चा पड़ोसी कौन ? ४८, १८. मैं भूखा था, तुमने खिलाया नहीं ५०, १९. जो सब जगको खिलाता है ! ५१, २०. तलवारवाले तलवारसे मरेंगे ५२, २१. अपराधीको क्षमा करो ५३, २२. प्रार्थना कैसे करनी चाहिए ? ५४।

४. ईसाई संतों ने कहा है ५६–६३

१. उदारता और दया ५६, २. निर्मल जीवन ५७, ३. बकबक बन्द कर ५८, ४. शान्ति कैसे मिले ? ५९, ५. दुःखोंका स्वागत ६०, ६. सच्चा बुद्धिमान् कौन ? ६१, ७. मुझे प्रेमका बीज बोने दे ! ६२, ८. प्रभु, मुझे अपना यंत्र बना ! ६३।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: १ :

करूँ मैं दुश्मनी किससे अगर दुश्मन भी हो अपना ।
मुहब्बतने नहीं दिलमें जगह छोड़ी अदावतकी ।।

जो हमारा मित्र है, दोस्त है, बन्धु है, स्नेही है, सखा है, आत्मीय है, उससे तो सभी प्रेम करते हैं, कर सकते हैं । उसमें कौन बड़ी बात है ?

पर, जो हमारा शत्रु है, दुश्मन है, वैरी है, विरोधी है, जो हमें सताता है, मारता है, गाली देता है, जो हमसे घृणा करता है, हमारी निन्दा करता है, हमारे खिलाफ षड्यन्त्र रचता है, उससे प्रेम करना, उसके कसूर माफ करना, उसके अन्याय, अत्याचार, अपमान, विरोध, द्वेष, घृणा, निन्दा, तिरस्कारको चुपचाप पी जाना मामूली बात नहीं है । बहुत बड़ी बात है । उसके लिए हृदयको बहुत उदार बनाना पड़ेगा । चित्तको बहुत शान्त करना पड़ेगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनको बहुत ऊँचा उठाना पड़ेगा। उसके लिए बड़ी तपस्या करनी होगी। उसके लिए बड़ा त्याग करना होगा। उसके लिए बड़ी सहनशीलता और क्षमा धारण करनी होगी।

यह कठिन काम आसानीसे भी हो सकता है।

कैसे ?

हृदयको प्रेमसे शराबोर कर लेनेसे। सभीको दोस्तीकी नजरसे देखनेकी आदत डाल लेनेसे।

दोस्तीकी नजर

एक आदमी बहुत दिनतक सूफी सन्त इब्राहीम बिन अदहमके साथ रहा।

जब वह उनके पाससे जाने लगा, तो उसने कहा : "आपने मुझमें जो ऐब देखे हों, वे मुझे बता दीजिये, ताकि उन्हें दूर कर सकूं।"

इब्राहीम बोले : "भैया, मुझे तुम्हारा कोई ऐब ही नजर नहीं आया, क्योंकि मैंने तुम्हें दोस्तीकी नजरसे देखा। ऐब तो उसे नजर आते हैं, जो किसीको दुश्मनीकी नजरसे देखता है !"

जिसे हम 'अपना' मान लेते हैं, उसके लिए अपने-आप ही हमारा दिल मुहब्बतसे भर उठता है। उसके सौ खून माफ हो जाते हैं। उसमें कोई दोष ही नहीं दीखता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लाली मेरे लालकी, जित देखूं तित लाल ।
लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल ।।

जब प्रत्येक मनुष्यके लिए, प्रत्येक स्त्रीके लिए, प्रत्येक प्राणीके लिए हमारा हृदय प्रेमसे भर उठेगा, तब यह सम्भव ही कैसे होगा कि हम उससे वैर-विरोध करें ? उसके दोष देखें ? उसमें खोज-खोजकर बुराइयाँ निकालें और उससे बुरा बर्ताव करें ?

सवाल है कि यह अपनापन हो कैसे ?

बुनियादी निष्ठा

यह अपनापन होता है तब, जब हम यह मानकर चलते हैं कि हम और दूसरे लोग एक हैं, एक खूनके हैं, एक वंशके हैं, एक जातिके हैं। एक पिताकी सन्तान हैं।

ईसाई धर्मकी बुनियादी निष्ठा यह है कि परमेश्वर सारे जगत्का पिता है। हम सब उस परम पिताकी संतान हैं। हम सब भाई-भाई हैं। हमें एक-दूसरेके साथ भाई-चारेका, प्रेमका, मुहब्बतका व्यवहार करना चाहिए।

पहाड़ीपरका उपदेश

प्रेम और सीमा-रहित प्रेम ही ईसाई धर्मकी मूल निष्ठा है। प्रभु ईसाने अपने जीवनसे, अपने व्यवहारसे, अपने कर्मसे, अपने वचनसे और अपने मनसे इस प्रेमकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही शिक्षा दी है। उनका पहाड़ीपरका उपदेश ईसाई धर्मकी आधार-शिला माना जा सकता है। उसीपर यह सारा महल खड़ा है।

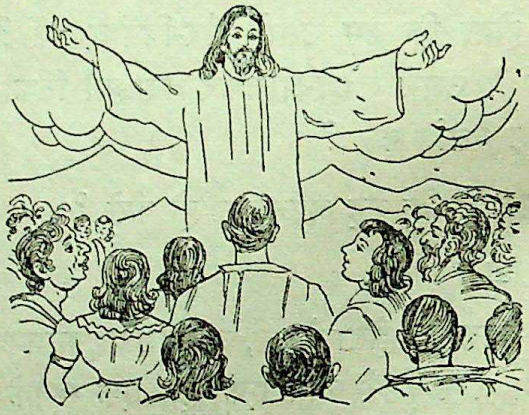

वे कहते हैं : "धन्य हैं वे, जो मनके दीन हैं, नम्र हैं, दयालु हैं, पवित्र हैं, शुद्ध हृदयवाले हैं, लोगोंके बीच मेल-जोल बढ़ानेवाले हैं, शान्ति स्थापित करानेवाले हैं, धर्मके जिज्ञासु हैं और धर्मके लिए कष्ट उठानेवाले हैं। स्वर्गका राज्य उन्हींका है। वे ही भगवान्‌के पुत्र कहलायेंगे।..."

सबसे प्रेम, दुश्मनसे भी !

"जो तुम्हारे पड़ोसी हैं, जो तुमसे प्रेम करते हैं, उन्हींसे तुमने प्रेम किया, तो कौन बड़ी बात की ? मैं तुमसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहता हूँ कि तुम अपने दुश्मनोंको प्यार करो। जो तुम्हें सताते हैं, उनके लिए दुआएँ माँगो। जो तुम्हारे एक गालपर थप्पड़ लगाये, उसके सामने दूसरा गाल भी कर दो। जो तुम्हारी दोहर छीन ले, उसे अपना कुर्ता भी दे दो! . . ."

कितना विशाल है यह प्रेम!

इसमें दया है, करुणा है, क्षमा है, उदारता है, मैत्री है, नम्रता है, सहनशीलता है, त्याग है। और क्या नहीं है?

ऐसा प्रेमिल व्यक्ति, दुश्मनको भी प्यार करनेवाला व्यक्ति धन्य है। वह अत्याचारी और अन्यायीकी भी प्रेमसे सेवा करेगा। सतानेवालेको भी प्यार करेगा। अहिंसाका इससे बढ़कर और कौनसा आदर्श हो सकता है? ऐसे व्यक्तिका रोम-रोम प्रेमसे शराबोर होगा। उसके जीवनका कण-कण पुकारता होगा:

खंजरको चूस-चूस कर कहते हैं मेरे जख्म,
जालिम मजे भरे हुए तुझमें कहाँके हैं?

ऐसा ही आदमी भगवान्‌का प्यारा बेटा माना जायगा। स्वर्गके राज्यमें उसीको प्रवेश मिलेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवान्‌के तीन रूप

ईसाई धर्ममें ऐसा माना जाता है कि भगवान् अपने-आपको तीन रूपोंमें प्रकट करता है :

१. परमपिता परमात्मा,

२. भगवान्‌का इकलौता पुत्र ईसा और

३. पवित्रात्मा ।

परमात्मा

ईसाई लोग मानते हैं कि परमेश्वर है वह एक है । वह सारे जगत्‌का पिता है, सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान् है, सर्वव्यापी है, परम पवित्र है, परम न्यायी है, परम करुणामय है, परम प्रेममय है, परम क्षमाशील है । वह अनादि है, अनन्त है, पूर्ण है, शिव है, रक्षक है, निर्विकार है । विश्वमें जो कुछ है, सब उसकी कृति है । उसीने सब कुछ बनाया है । आदमीको भी उसीने बनाया है, पशु-पक्षियोंको भी, शेष जगत्‌को भी ।

सारा संसार उस परमात्माके बनाये नियमोंके अनुसार ही चलता है । अनुभवसे और अन्तर्बोधसे उसके अस्तित्वका भान होता है ।

प्रभु ईसा

ईसाइयोंका मत है कि प्रभु ईसा भगवान्‌के इकलौते पुत्र हैं । वे भगवान् और मनुष्यके बीचकी कड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं। वे मनुष्यके रूपमें पैदा हुए। मनुष्योंके साथ रहे। मनुष्योंको उन्होंने उपदेश दिया। तरह-तरहके कष्ट झेले और अंतमें क्रूसपर, टिकटीपर लटककर उन्होंने अपने प्राण दिये। उनका पुनरुत्थान हुआ। वे स्वर्ग गये।

ईसा इस दुनियामें क्यों आये ? उनके जीवनका उद्देश्य क्या था ? यह उन्होंने समय-समयपर बताया है।

ईसाका कहना था कि कायदे-कानूनको और पैगम्बरोंकी बातको पूरा करनेके लिए वे आये। जो लोग रास्ता भूल गये थे, लम्बे-चौड़े पूजा-पाठ, गण्डे-ताबीज और कर्मकाण्डको ही सब कुछ मान बैठे थे, उन्हें सही रास्ता दिखानेके लिए ही वे इस दुनियामें आये।

ईसाने बताया कि ईश्वर ही सत्य है। उसका सच्चा ज्ञान पाना ही अमर जीवन है। उसे जान लेनेसे ही सब लोग पापकी गुलामीसे छूट सकेंगे।

ईसाने कहा कि ईश्वर ही हमारा पिता है। हम सब लोग भाई-भाई हैं। सबके साथ हम भाईचारेका बर्ताव करें। सबको अपना मानें।

ईसाने सभी लोगोको संयम, त्याग, सेवा और समर्पणकी प्रेरणा दी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवित्रात्मा

ईसाई लोग मानते हैं कि विश्वमें एक दैवी आत्मा है। वह पवित्रात्मा मनुष्यका चित्त शुद्ध करती है और उसे भगवान्‌की ओर ले जाती है। उसके द्वारा मनुष्य परमेश्वरके राज्यमें प्रवेश पाता है। वह भगवान्‌की प्रेरणा है, ईश्वरकी शक्ति है। वह हमें जागरूक करती है। वह प्रेम, आनन्द, विश्वास, भक्ति जैसे दैवी गुणोंको विकसित करती है। ईसाइयोंका विश्वास है कि जबतक पवित्रात्माकी कृपा न होगी, तबतक मनुष्य दोषोंसे मुक्त होकर भगवान्‌के चरणोंमें नहीं जा सकेगा।

चर्च

सारे संसारमें फैले ईसाइयोंके भाईचारेमें विश्वास करना भी ईसाई धर्मका सिद्धान्त माना गया है। इस चर्चका सबसे ऊँचा अधिकारी माना जाता है, पोप। न दीखनेवाला सबसे ऊँचा अधिकारी है, प्रभु ईसा।

बाइबिल

बाइबिल ईसाइयोंका पवित्र ग्रन्थ है। उसे वे ईश्वरीय पुस्तक मानते हैं।

बाइबिलके दो भाग हैं : एक पुरानी, दूसरी नयी। पहली है, पुराने धर्म-नियमकी पुस्तक; दूसरी है, नये धर्म-नियमकी पुस्तक। पुराना धर्मग्रन्थ, नया धर्मग्रंथ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु ईसाके समयमें पुराने नियमकी पुस्तक चालू थी। ईसाने कोई नयी पुस्तक नहीं लिखी। वे लोगोंको उपदेश देते थे। बादमें उनके चेले भी केवल प्रचार करके ही 'सु-समाचार' सुनाते रहे। कोई तीस सालतक किसी नयी धर्म-पुस्तककी जरूरत नहीं मालूम पड़ी। बादमें ईसाके चेलोंने प्रभुका सु-समाचार लिख डाला। सबसे पहले मरकुस (मार्क) ने सु-समाचार रचा, फिर मत्ती (मैथ्यू) और लूका (ल्यूक) ने। इन तीनोंके अपने-अपने ढंगसे लिखे सु-समाचारोंमें बहुत-सी बातें एक-सी मिलती हैं। यूहन्ना (जान) रचित सुसमाचार इन सबसे थोड़ा भिन्न है।

नये धर्म-नियममें इन चारों सुसमाचारोंके अलावा पौतुस प्रेरितकी तथा दूसरोंकी पत्रियाँ भी हैं।

बाइबिलमेंसे चमत्कारी और जादू-टोनों आदिकी बातोंको निकाल दें, तो हम देखेंगे कि मनुष्यके जीवनको ऊपर उठानेवाली असंख्य बातें उसमें भरी पड़ी हैं।

धर्मका मूल आधार

ईसाई धर्म प्रेम और अहिंसाकी बुनियादपर खड़ा है।
सेवा और त्याग उसकी आधार-शिला है।
ईसाका पवित्र जीवन उसका प्रकाश-स्तम्भ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आपसमें प्रेम करो। शत्रुको भी प्यार करो। अपराधीको क्षमा करो। पापसे घृणा करो। पापीकी सेवा करो। दुखियों और पीड़ितोंके लिए सर्वस्व न्योछावर करो——यह है ईसाका सन्देश। विश्वके कोने-कोनेमें फैले असंख्य मिशनरियोंने इसे चरितार्थ करके दिखाया है।

आज संसारमें, अपनेको ईसाई कहनेवाले बहुतसे लोगोंमें धर्मकी यह मूल भावना धूमिल पड़ गयी है। दूसरे धर्मवालोंका भी कुछ-कुछ ऐसाही हाल है। ऊपरी आडम्बरने सत्यके प्रकाशको ढँक लिया है। तभी तो जगह-जगह लड़ाई-झगड़े, वैर-विरोध, राग-द्वेषकी बातें दीखती हैं।

ईसाका कोई सच्चा भक्त भला कभी ऐसी कोई बात सोच सकता है, जो दूसरे किसी भाईके हितके विरोधमें हो ? कभी नहीं।

सच्चा ईसाई वही है, जो मनुष्यमात्रसे प्रेम करता है और प्राणिमात्रकी सेवाके लिए, अपना सर्वस्व न्योछावर करनेके लिए सदा-सर्वदा तैयार रहता है।

क्या हम इस कसौटीपर कभी खरे उतर सकेंगे ?

धन्य हो उठेगा उस दिन हमारा यह जीवन !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: २ :

प्रभु ईसा

प्रेमका मसीहा ईसा !

नीचेसे ऊपरतक उसमें एक ही तत्त्व भरा था : प्रेम, प्रेम, प्रेम !

ईश्वरका प्रेम ।

मनुष्यका प्रेम ।

बच्चोंका प्रेम ।

पशु-पक्षियोंका प्रेम ।

सारी प्रकृतिका प्रेम ।

उसका सारा जीवन प्रेमकी ही एक कहानी है ।

कहा है :

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देय लै जाय ।।

ईसाको भी इस प्रेमकी बदौलत क्रूसपर लटकना पड़ा । सत्यका प्रेम उसे इस ओर खींच ले गया । सच कहनेवालेको सूलीपर लटकना पड़ता है । सुकरात हो,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईसा हो, गांधी हो––सबको सत्यके लिए अपने प्राणोंकी बलि चढ़ा देनी पड़ी ।

जन्म और बचपन

कोई १९६८ साल पहलेकी बात है। फिलस्तीनमें उन दिनों हिरोदका राज था। सम्राट् आगस्टसके हुकुमसे रोमन-जगत्की मर्दुमशुमारी हो रही थी। उसमें शामिल होनेके लिए यूसुफ नामका यहूदी बढ़ई नाजरेत नगरसे बेथलहमके लिए रवाना हुआ। वहींपर उसकी पत्नी मरियम (मेरी)के गर्भसे ईसाका जन्म हुआ। संयोग ऐसा था कि उस समय इन बेचारोंको किसी धर्मशालामें भी ठिकाना न मिल सका। लाचार इस बच्चेको कपड़ोंमें लपेटकर चरनीमें रख दिया गया।

आठवें दिन बच्चेका नाम रखा गया, यीसु या ईसा।

सौरीसे निकलनेके बाद मरियम और यूसुफ बच्चेको लेकर यरूशलम गये। उन दिनों ऐसी प्रथा थी कि माता-पिता बड़े बेटेको मन्दिरमें ले जाकर ईश्वरको अर्पित कर देते थे। इन लोगोंने भी इसी तरह ईसाको अर्पित कर दिया।

ईसा दिन-दिन बड़े हो रहे थे। यूसुफ और मरियम हर साल यरूशलम जाते थे। ईसा भी साथ जाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईसा जब बारह वर्षके हुए, तो यरूशलममें दो दिन रुककर पुजारियोंसे ज्ञान-चर्चा करते रहे। सत्यको खोजनेकी वृत्ति उनमें बचपनसे ही थी

यूहन्नासे दीक्षा

ईसा जब ३० सालके हुए, तो एक दिन किसीसे उन्होंने सुना कि पासके जंगलमें जार्डन नदीके किनारे एक महात्मा रहते हैं। उनका नाम है, यूहन्ना (जान)। बहुत-से लोग उनका उपदेश सुनने जाते थे। ईसाको भी उत्सुकता हुई। वे भी यहन्नाका उपदेश सुननेके लिए निकल पड़े।

यूहन्ना कहते थे : "अब धरतीपर प्रभुके राज्यका समय आ गया है। प्रभुके राज्यमें हर आदमी यह जान लेगा कि सब आदमी बराबर हैं। न कोई किसीसे ऊँचा है, न कोई किसीसे नीचा। सब लोगोंको आपसमें मिल-जुलकर प्रेमसे रहना चाहिए और सबके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। इस तरह रहने और बुरे काम छोड़ देनेसे ही धरतीपर प्रभुका राज्य आ सकेगा।"

सैनिक उनके पास जाते, तो वे उनसे कहते : "दूसरोंका माल मत छीनो। जो कुछ तुम्हें मिला है, उसीमें खुश रहो। किसीसे गाली-गलौज मत करो।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोग पूछते : "तब हम करें क्या ?"

यूहन्ना कहते : "जिसके पास दो कोट हैं, वह एक कोट उसे दे दे, जिसके पास एक भी नहीं है। जिसके पास भोजन है, वह उसे खिला दे, जिसके पास खानेके लिए कुछ नहीं है।"

अमीर लोग यूहन्नाके पास जाते, तो वे उनसे कहते : "तुम गरीबोंको सताओ मत। उन्हें लूटो मत।"

यूहन्ना लोगोंसे कहते : "अच्छी करनी करो। अपना जीवन बदल डालो, नहीं तो तुम्हारी भी गति उस बिना फलवाले पेड़की तरह होगी, जो ईंधनके लिए काट दिया जाता है।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो लोग उनसे कहते कि "हम अपना जीवन बदलेंगे, बदी छोड़कर नेकी करेंगे", उन्हें वे जार्डन नदीमें नहलाते और कहते : "मैंने तुम्हें जलसे पवित्र किया है। तुम्हारी अन्तरात्मामें प्रभुकी जो शक्ति भरी है, वह तुम्हें पूरे तौरसे पवित्र करेगी।"

ईसाको यूहन्नाकी बातें बहुत जँचीं। उन्होंने यूहन्नासे दीक्षा ले ली। उनकी बातोंपर गहरा विचार करनेके लिए वे घर लौटनेके बजाय जंगलमें ही रह गये।

यूहन्नाकी बातोंपर ईसाने गहराईसे चिन्तन और मनन किया। और अन्तमें निश्चय किया कि हमें प्रभुकी इच्छाके अनुसार प्रभुकी सेवा करनी चाहिए।

प्रभुके राज्यका उपदेश

इसके बाद प्रभु ईसा जगह-जगह प्रवचन करने लगे। वे लोगोंसे कहते :

प्रभुका राज्य कहीं दूर नहीं है। वह हमारे भीतर ही है। हमारी आत्माके ही भीतर है। हमें ही उसकी स्थापना करनी होगी। हम अपने-आपको बदलकर, अपनेमें परिवर्तन करके प्रभुका राज्य ला सकते हैं। उसके लिए हमें सबके साथ प्रेम करना होगा। सबके सुखमें सुखी होना होगा। सबके दुःखमें दुःखी होना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
होगा। हम अलग-अलग नहीं हैं, हम सब एक हैं––इस तरह हमें सोचना होगा और एक दूसरेके साथ इसी तरहका व्यवहार करना होगा।

प्रभुके राज्यमें अहंकार और घमंडके लिए स्थान नहीं है। अमीरोंका वहाँ प्रवेश नहीं है। जो नम्र हैं, विनीत हैं, गरीब हैं, दीन हैं, सच्चे हैं, ईमानदार हैं, दयालु हैं, उन्हींको उस राज्यमें प्रवेश मिलेगा।

स्वर्गके राज्यमें, प्रभुके राज्यमें वे ही लोग जा सकेंगे, जो ईश्वरके आदेशको मानकर उसे अमलमें लाकर दिखायेंगे।

पाँच आदेश

ईसाने पाँच आदेश दिये। उन्होंने कहा :

१. पुराने धर्मग्रन्थमें कहा है कि 'किसीकी हत्या मत करो' और 'जो आदमी हत्या करता है, वह गुनहगार है।'

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जो आदमी अपने भाई-पर गुस्सा करता है, वह परमात्माकी नजरमें गुनहगार है। जो आदमी अपने भाईको गालियाँ देता है, कड़वी बातें कहता है, वह और ज्यादा गुनहगार है। अपने भाईपर मनमें जो क्रोध हो, उसे प्रार्थना करनेके पहले निकाल दो। उससे सुलह कर लो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. पुराने धर्मग्रन्थमें कहा है कि 'व्यभिचार मत करो और पत्नीसे अलग होते हो, तो उसे तलाक दे दो।'

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि व्यभिचार तो करना ही नहीं चाहिए, किसी स्त्रीपर बुरी नजर भी नहीं डालनी चाहिए। किसीपर कुदृष्टि डालनेवाला भी ईश्वरके आगे गुनहगार है। जो आदमी पत्नीको तलाक देता है, वह खुद व्यभिचार करता है और पत्नीसे भी व्यभिचार करानेका कारण बनता है। जो आदमी उससे विवाह करता है, उसे भी वह गुनहगार बनाता है।

३. पुराने धर्मग्रन्थमें कहा है कि 'कसम न खाओ, किन्तु परमात्माके आगे अपनी प्रतिज्ञाओंपर डटे रहो।'

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें किसी भी हालतमें कसम नहीं खानी चाहिए। किसीके बारेमें पूछा जाय, तो 'हाँ' या 'ना' में ही जवाब दे देना चाहिए।

४. पुराने धर्मग्रन्थमें कहा है कि 'आँखके बदले आँख फोड़ दो, दाँतके बदले दाँत तोड़ दो।'

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि बुराईका बदला बुराईसे मत दो। कोई तुम्हारे दाहिने गालपर चाँटा मारे, तो तुम बायाँ गाल भी उसके सामने कर दो।

५. पुराने धर्मग्रन्थमें कहा है कि 'केवल अपनी ही जातिके लोगोंसे प्रेम करो।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें हर आदमीसे प्रेम करना चाहिए। जो तुम्हें दुश्मन मानते हों, उनसे भी प्रेम करना चाहिए। सभी मनुष्य एक ही पिताकी सन्तान हैं। सब भाई-भाई हैं। सबके साथ तुम्हें प्रेमका व्यवहार करना चाहिए।

पवित्र जीवन

'सत्यमय जीवन बिताओ। सबपर प्रेम करो। सब-पर दया करो। दान करो। क्रोध मत करो। लोभ मत करो। विषय-वासनाके फेरमें मत पड़ो। अपराधीको भी क्षमा करो। पापसे घृणा करो, पापीसे नहीं। जो सत्य हो, उसे प्रकट करनेमें झिझको मत। न अन्याय करो, न अत्याचार। न दिखावा करो, न प्रदर्शन। ईश्वरपर विश्वास करो। गरीबोंकी सेवा करो।'

यही था ईसाका संदेश, जिसे उन्होंने जनताके सामने रखा और अपने जीवनमें चरितार्थ करके दिखा दिया। उनका सारा जीवन त्याग, सेवा और समर्पणकी भावनासे भरा पड़ा है।

चमत्कार

'विश्वासः फलदायकः'—विश्वासका फल होता है। कितने ही रोगी विश्वाससे अच्छे हो गये। ईसाकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसिद्धि चारों ओर फैलने लगी। बारह लोग ईसाके शिष्य बने।

विरोध

'पैसेवालोंका स्वर्गके राज्यमें प्रवेश नहीं हो सकता। सूईके छेदसे ऊँट भले निकल जाय, धनवान् व्यक्ति प्रभुके

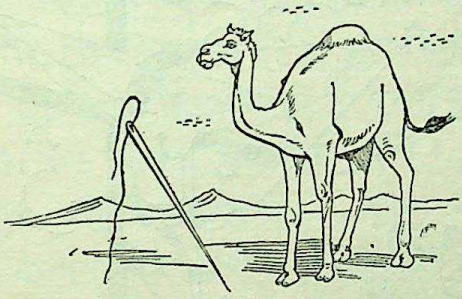

राज्यमें नहीं पहुँच सकता। अपनी सारी दौलत गरीबोंमें बाँटकर, अकिंचन बनकर मेरे साथ आओ'—ऐसी बातें सुनकर पैसेवाले लोग ईसाके विरोधी बन गये।

पुरानी गलत प्रथाओंका भी ईसाने विरोध किया। सत्यके लिए उन्हें किसीकी परवाह न थी। नतीजा यह हुआ कि दिन-दिन उनका विरोध बढ़ने लगा।

बलिदान

सन् २९ ई० के लगभग प्रभु ईसा गदहेपर चढ़कर यरूशलम पहुँचे। वहीं उनको पकड़ने और दण्डित करनेका षड्यन्त्र रचा गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिलातुस बोला : "यह निर्दोष है।"

विरोधी बोले : "यह अपनेको 'ईश्वरका पुत्र' कहता है। इसे क्रूसपर लटकाना चाहिए।"

आखिर विरोधियोंकी ही बात मान ली गयी।

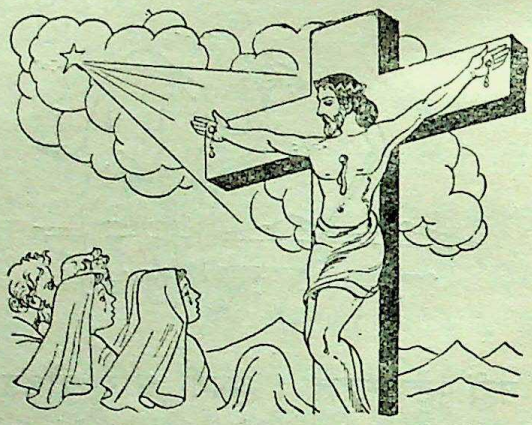

ईसाने क्रूसपर लटकते समय भगवान्‌से प्रार्थना की : "हे प्रभु, क्रूसपर लटकानेवाले इन लोगोंको क्षमा कर। वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं!"

ईसाका सन्देश

प्रभु ईसाने जबसे होश सँभाला, तभीसे उन्हें लगा कि उनके यहूदी-समाजमें नाना प्रकारकी गलत मान्यताएँ फैली हैं। उन्होंने उनका विरोध करके मनुष्यको सही रास्तेपर चलनेकी सीख दी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनुष्य है, विश्वका प्रकाश

उस समयके समाजमें आदमी अपने-आपको बहुत नीच, पापी और अपवित्र मानकर आत्मग्लानिसे पीड़ित रहता था। आदम हौवाकी गलतीकी मान्यता उसके सिरपर चढ़कर बोलती थी। ईसाको यह चीज बुरी तरह खटकी। उन्होंने मनुष्यको संदेश दिया कि तुम तो पृथ्वीके नमक हो। विश्वके प्रकाश हो! तुम किसलिए अपनेको अपवित्र और पापी समझते हो? परम पवित्र प्रभुकी संतानको ऐसी मान्यता शोभा नहीं देती। तुम अपनेको नाच और अपवित्र मत समझो। अपना आदर करो। अपना आत्मसम्मान जगाओ। तुम सब परमपिताकी संतान हो। सब बराबर हो। कोई नीचा नहीं, कोई ऊँचा नहीं।

क्रोध मत करो

क्रोध सारे उत्पातकी जड़ है। दुनियाभरकी बुराइयाँ क्रोधमें भरी हैं। इसलिए क्रोधको दूर करना आवश्यक है। सारी लड़ाइयाँ जरा-जरासी बातोंको लेकर होती हैं। ईसाने इसे रोकनेके लिए कहा :

१ जो कोई अपने किसी भाईपर क्रोध करता है, उसे ईश्वरकी तरफसे सजा भोगनी पड़ेगी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. तुम दूसरेका मुकाबला वारसे मत करो। चाहे जितना गुस्सा भरा रहे, दूसरेपर हमला न करो। बुराई-का बदला बुराईसे मत दो।

३. दोस्तको ही नहीं, दुश्मनको भी प्यार करो।

जो तोकों काँटा बुवै , ताहि बोउ तू फूल !

सत्य बोलो

ईसाने देखा कि लोग सत्य नहीं बोलते, झूठ बोलते हैं। नमक-मिर्च लगाकर बातका बतंगड़ बना देते हैं और खूब झूठी कसमें खाया करते हैं। यह आदत ठीक नहीं। उन्होंने कहा :

'तुम्हें जो कहना हो, 'हाँ' या 'ना' में कह दो। ज्यादा शब्द मुँहसे निकालोगे, तो वे तुम्हारे भीतर भरे किसी पापकी वजहसे ही निकलेंगे।'

किसीपर कुदृष्टि न डालो

ईसाने मनकी पवित्रतापर बहुत जोर दिया। उन्होंने कहा :

'जो आदमी मनसे भी किसी स्त्रीपर बुरी नजर डालता है, उसने मानो उससे बदचलनी कर ही ली !'

नेकी कर और दरियामें डाल

ईसा ढोंग और दिखावेको बहुत बुरा मानते थे। उन्होंने इसकी कड़ी निन्दा की। उनका कहना था कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'नेकी कर और दरियामें डाल।' ईमानदार रहो। लोगोंके साथ भला व्यवहार करो और कसूरवारको हमेशा क्षमा करते रहो।

ईश्वरपर विश्वास

हम ऊपरसे तो ईश्वरको मानते हैं, पर भीतरसे अपनेपर ही भरोसा रखते हैं। ईसाने कहा :

तुम जीवनकी आवश्यकताओंकी चिन्ता व्यर्थ ही करते हो।

आगे पाछे हरि खड़े, जब माँगूँ तब देय।

माँगो, मिलेगा। दरवाजा खटखटाओ, खुलेगा।

यह है, ईसाका पवित्र संदेश ! सत्य, प्रेम और करुणासे ओतप्रोत !

जो कोई इसका पालन करेगा, उसका कल्याण हुए बिना नहीं रहेगा।

जरूरत है, जी-जानसे इसपर चलनेकी।

काश, हम इसपर चल सकें !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ३ :

बाइबिल में कहा है

स्वर्गका राज्य उन्हें मिलेगा : १ :

भीड़ देखकर प्रभु ईसा पहाड़ीपर चढ़ गये। वहाँसे उन्होंने लोगोंको उपदेश देना शुरू किया :

धन्य हैं वे, जो मनके दीन हैं। स्वर्गका राज्य उन्हीं-का है।

धन्य हैं वे, जो नम्र हैं। वे ही पृथ्वीके मालिक होंगे।

धन्य हैं वे, जो धर्मके भूखे-प्यासे हैं। वे तृप्त किये जायँगे।

धन्य हैं वे, जो दयालु हैं। उनपर दया की जायगी।

धन्य हैं वे, जिनके हृदय शुद्ध हैं। उन्हें प्रभुके दर्शन मिलेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धन्य हैं वे, जो शान्ति करानेवाले हैं, मेल-जोल करानेवाले हैं। वे भगवान्‌के पुत्र कहलायेंगे।

धन्य हैं वे, जो धर्मके कारण सताये जाते हैं। स्वर्ग-का राज्य उन्हींका है।[१]

भलाईसे बुराईको जीतो : २ :

जो कोई दान दे, वह सिधाईके साथ दान दे।
जो कोई दया करे, वह हँसी-खुशीके साथ दया करे।
प्रेममें कोई कष्ट नहीं होना चाहिए।
बुराईसे घृणा करनी चाहिए।
भलाईमें लगे रहना चाहिए।
एक-दूसरेके साथ भाईचारेका प्रेम करना चाहिए।
एक-दूसरेका आदर करनेमें होड़ करनी चाहिए।
प्रयत्न करनेमें आलस नहीं करना चाहिए।
आशामें प्रसन्न रहो। दुःखमें स्थिर रहो।
सज्जनोंकी सहायता करो। अतिथियोंकी सेवा करो।
सतानेवालोंको आशीर्वाद दो।
हँसनेवालोंके साथ हँसो। रोनेवालोंके साथ रोओ।
बुराईके बदले बुराई न करो।

---

१. मत्ती ५।१-१०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भले काम करो। सबसे मेल रखो।
किसीसे बदला मत लो।
तुम्हारा शत्रु भूखा हो, तो उसे खाना खिलाओ।
प्यासा हो तो, पानी पिलाओ।
बुराईको अपने ऊपर हावी मत होने दो।
भलाईसे बुराईको जीतो।[1]

दुश्मनको प्यार करो : ३ :

तुमसे कहा गया था कि अपने पड़ोसीसे प्रेम करो और अपने दुश्मनसे घृणा।

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम अपने दुश्मनको प्यार

करो और जो लोग तुम्हें सताते हैं, उनके लिए प्रार्थना

१. रोमियो १२।८-२१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करो। तभी तुम स्वर्गमें रहनेवाले अपने पिताकी संतान ठहरोगे, क्योंकि वह भले और बुरे दोनोंपर अपना सूर्य उदय करता है, धर्मियों और अधर्मियों दोनोंपर मेह बरसाता है। यदि तुम उन्हींसे प्रेम करो, जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो तुमने कौनसी मार्केकी बात की ?[१]

कोसे, उसे दुआ दो

अपने शत्रुसे प्रेम रखो। जो तुमसे वैर करें, उनका भला करो। जो तुम्हें शाप दें, उन्हें आशीर्वाद दो। जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिए प्रार्थना करो।

जो तुम्हारे एक गालपर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दो। जो तुम्हारी दोहर छीन ले, उसे अपना कुरता भी ले लेने दो।

जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। जो तुम्हारी कोई चीज छीन ले, उससे उसे वापस न माँगो।

यदि तुम प्रेम करनेवालोंके साथ प्रेम करो, तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई ? पापी भी तो ऐसा करते हैं। उधार देकर वापस पानेकी तुम आशा रखो, तो उसमें तुम्हारी क्या बड़ाई ? पापी भी तो ऐसा ही करते हैं।

जो बुरे हैं, उनपर भी वह परम पिता कृपालु है। तुम भी उसीकी तरह दयालु बनो।[२]

---

१. मती ५।४५-४६। २. लूका ६।२७-३७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकाल दो वह आँख : ४ :

तेरा हाथ या पैर तुझे ठोकर खिलाये, तो तेरे लिए अच्छा यह होगा कि तू उसे काटकर फेंक दे

तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाये, तो उसे निकालकर फेंक दे। काना होकर जीना तेरे लिए अच्छा है, बजाय

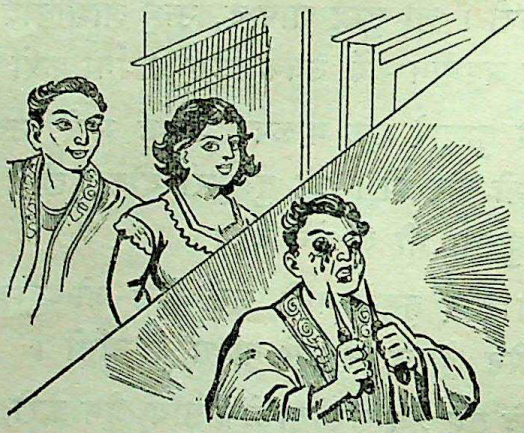

इसके कि दो आँख रहते हुए तुझे नरककी आगमें जलना पड़े।

नरकका चौड़ा रास्ता

तुम सँकरे रास्तेसे घुसो। नरकको जानेवाली सड़क चौड़ी है और फाटक बड़ा है। बहुतसे लोग उसमें घुसते

---

१. मत्ती १८।८-९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं। सँकरी सड़क और सँकरे दरवाजेवाले स्वर्गकी ओर कम ही लोग जाते हैं।[1]

दीपक जलता रखो : ५ :

अपनी कमर बाँधे रहो और दीपक जलता रखो। ऐसा न हो कि प्रभु तुम्हें बे-खबर पाये।[2]

प्रलोभनमें न पड़ो

हमेशा सावधान रहो और ईश्वरकी प्रार्थना करते रहो कि कहीं तुम प्रलोभनमें न पड़ जाओ। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।[3]

---

१. मत्ती ८।१३-१४। २. लूका १२।३५। ३. मत्ती २६।४१।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहला पत्थर वह मारे ! : ६ :

ईसा मन्दिरमें बैठे उपदेश कर रहे थे।

तभी कुछ लोग एक स्त्रीको लाये, जो बदचलनी करते हुए पकड़ी गयी थी।

लोगोंने उसे बीचमें खड़ा करके ईसासे पूछा : 'हे गुरु, यह स्त्री बदचलनी करते पकड़ी गयी है। मूसा-

की आज्ञा है कि ऐसी स्त्री पत्थर बरसाकर मार डाली जाय। आप क्या कहते हैं ?'

ईसा झुक कर उँगलीसे जमीनपर लिखने लगे। जब पादरी और फरीसी, जो उसे लाये थे, बार-बार उनसे वही सवाल करते रहे, तो ईसाने सीधे होकर उनसे कहा :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुममें से पहला पत्थर वह मारे, जिसने कभी कोई पाप न किया हो।'

ईसा फिर झुककर जमीनपर लिखने लगे।

ईसाकी बात सुनकर सभी छोटे-बड़े आदमी एक-एक कर वहाँसे खिसक गये। खड़ी रह गयी केवल वह बेचारी स्त्री!

ईसा खड़े होकर उससे पूछने लगे : "कहाँ गये वे सब लोग, जो तुझपर इलजाम लगा रहे थे? क्या किसीने भी तुझे दण्ड नहीं दिया?"

वह बोली : "नहीं प्रभु, किसीने नहीं।"

ईसा बोले : "मैं भी तुझे कोई दण्ड नहीं देता। जा, फिर पाप मत करना।"[१]

विश्वासः फलदायकः : ७ :

किसी फरीसीने ईसासे विनती की कि मेरे साथ भोजन कर। सो वे उस फरीसीके घरमें जाकर भोजन करने बैठे।

---

१. यूहन्ना ८।२-११

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस नगरकी एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि प्रभु फरीसीके घरमें भोजन करने बैठा है, संगमरमरके पात्रमें इत्र लायी। वह उसके पाँवोंके पास पीछे खड़ी हुई। रो-रोकर वह उसके पाँवोंको आँसुओंसे भिगोने लगी और सिरके बालोंसे पोंछने लगी। उसने उसके पैर बारबार चूमे और उनपर इत्र मला।

फरीसी सोचने लगा कि यदि यह भूत-भविष्य जानता होता तो जान जाता कि जो स्त्री उसे छू रही है, वह पापिनी है !

प्रभु ईसा उससे बोले : "हे शमीन, किसी महाजनके दो देनदार थे। एक पाँच सौ दीनार चाहता था, दूसरा पचास। उनके पास पटानेको जब कुछ न रहा, तो महाजनने दोनोंको क्षमा कर दिया। सो उनमेंसे कौन उससे अधिक प्रेम करेगा ?

फरीसी बोला : "वह, जिसका अधिक पैसा उसने छोड़ दिया।"

प्रभु ईसाने कहा : "तू ठीक कहता है। इस स्त्रीको देख। मैं तेरे घरमें आया, परन्तु तूने मेरे पैर धोनेको पानी भी न दिया। इस स्त्रीने अपने आँसुओंसे मेरे पैर धोये। अपने बालोंसे उन्हें पोंछा। तूने मुझे चूमा तक नहीं। जबसे मैं आया हूँ, तबसे इसने मेरे पैरोंका चूमना नहीं छोड़ा। इसने मेरे पाँवोंपर इत्र मला। इससे इसके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तमाम पाप क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया।

उस स्त्रीसे ईसाने कहा : "तेरे सारे पाप क्षमा हुए। तेरे विश्वासने तुझे बचा लिया।"[१]

पति-पत्नी एक होकर रहें : ८ :

"क्या किसी भी कारण अपनी पत्नीको छोड़ देना उचित है ?"

ईसाने कहा : "क्या तुमने यह नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया, उसने शुरूसे नर और नारी बनाकर कहा कि मनुष्य माता-पितासे अलग होकर पत्नीके साथ रहेगा। पति, पत्नी दोनों मिलकर एक-तन होंगे। सो वे दोनों अब दो नहीं, एक-तन हैं। परमेश्वरने जिन्हें जोड़ा है, उन्हें मनुष्यको अलग नहीं करना चाहिए।"[२]

वह गुनहगार है !

"जो आदमी बदचलनीके सिवा और किसी कारण अपनी पत्नीको छोड़कर दूसरीसे ब्याह करता है, वह बदचलनी करता है। जो आदमी उस छोड़ी हुई स्त्रीसे ब्याह करता है, वह भी बदचलनी करता है।"[३]

---

१. लूका : ७।३६–५०। २. मत्ती १९।३–६। ३. वही १९।९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन पानेके लिए मैं क्या करूँ ?"—एक सरदारने ईसासे पूछा।

ईसाने कहा : "तू जानता ही है परमेश्वरकी आज्ञाओंको। उसने कहा है कि व्यभिचार मत करो। हत्या मत करो। चोरी मत करो। झूठी गवाही मत दो। माता-पिताका आदर करो।"

"इन सब बातोंका पालन तो मैं लड़कपनसे ही करता आ रहा हूँ।"
—वह बोला।

यह सुन प्रभु ईसाने कहा : "अपना सब कुछ बेचकर कंगालोंको बाँट दे और फिर मेरे पीछे हो ले।"

ईसाकी यह बात सुनकर वह बहुत ही दुःखी हुआ, क्योंकि वह बहुत पैसेवाला था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईसाने उसे देखकर कहा : "सूईके छेदसे ऊँटका निकल जाना सहज है, पर पैसेवालोंका स्वर्गमें जा पाना कठिन है।"[१]

दरिद्र-नारायणको भोज

तू जब भोजन दे, तो अपने मित्रों, भाइयों, कुटुम्बियों या धनी पड़ोसियोंको मत खिला। कहीं वे तुझे भोज देकर अपना बदला न चुका दें। तू भोज दे कंगालों, लूलों, लंगड़ों और अन्धोंको।

उनके पास बदला देनेको कुछ न होगा, पर तुझे उसका पुण्यफल मिलेगा।[२]

गरीबोंको दो

जो कोई तुझसे माँगे, उसे दे। जो तुझसे उधार माँगे, उससे मुँह मत मोड़।[३]

पड़ोसीसे प्रेम करो : १० :

"हे गुरु, परमेश्वरकी सबसे बड़ी आज्ञा क्या है?"

"परमेश्वरकी सबसे बड़ी आज्ञा यह है कि तू अपने पूरे मन, प्राण और बुद्धिसे परमेश्वरसे प्रेम कर। इसी

---

१. लका १८।१८–२५। २. लूका १४।१२–१४। ३. मत्ती ५।४२।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तरहकी दूसरी बड़ी आज्ञा यह है कि तू अपने पड़ोसीसे भी अपने समान ही प्रेम कर।"[१]

मित्रके लिए प्राण दो

"इससे बड़ा प्रेम किसीका नहीं कि कोई अपने मित्रोंके लिए अपने प्राण दे दे।"[२]

बीमारोंकी सेवा करो : ११ :

बीमारोंको चंगा करो। मुर्दोंको उठाओ। कोढ़ियों-

की सफाई करो। दुष्टोंको निकाल बाहर करो। खुले हाथसे तुमने पाया है, खुले हाथसे बाँटो।[३]

---

१. मत्ती, २२।३७–३९। २. यूहन्ना १५।१३। ३. मत्ती १०।८।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब बेचकर दान करो

सब कुछ बेचकर दान कर दो। अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते। स्वर्गमें अपने लिए धन इकट्ठा करो, जो न तो घटता है, न उसमें कीड़े लगते हैं, न चोर ही उसे चुराता है। जहाँ तुम्हारा धन रहेगा, वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा।[1]

अपने लिए धन न बटोरो : १२ :

भीड़मेंसे एकने कहा : "हे गुरु, मेरे भाईसे कह दो कि वह पिताकी सम्पत्ति मुझे बाँट दे।"

ईसाने कहा : "हे मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा पंच बनाया ? सावधान, हर तरहके लोभसे अपनेको बचाये रहो। सम्पत्तिकी बहुतायतसे किसीका जीवन सुखी या सम्पन्न नहीं होता।"

एक धनी आदमीके यहाँ खूब पैदावार हुई। उसने सोचा कि मैं खूब बड़ी-बड़ी बखारियोंमें अन्न और सम्पत्ति भर दूँगा और वर्षोंतक सुख-चैनकी बंसी बजाऊँगा। परन्तु परमेश्वरने उससे कहा : 'मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण

१- लूका १२।३३–३४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
तुझसे छीन लिया जायगा। तब तेरी यह सारी सम्पत्ति तेरे किस काम आयेगी ?'

ऐसा ही वह मनुष्य है, जो अपने लिए धन बटोरता है। परन्तु परमात्माकी दृष्टिमें वह धनी नहीं है।[१]

ईश्वरके लिए त्याग करो

"जिस किसीने मेरे लिए घर छोड़े, भाई छोड़े, बहनें छोड़ीं, माता-पिता या बेटा-बेटी छोड़े, खेत या जमीन छोड़ी, उसे सौगुना मिलेगा।"[२]

सब कुछ त्याग दो

"तुममेंसे कोई भी क्यों न हो, यदि वह सर्वस्व त्याग नहीं करता, तो वह मेरा शिष्य नहीं बन सकता।"[३]

गरीबका दान : १३ :

एक कंगाल विधवाने मन्दिरकी दानपेटीमें दो दमड़ियाँ डालीं। ईसाने अपने चेलोंसे कहा : "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस कंगाल विधवाने सबसे बड़ा दान दिया है; क्योंकि और सबने तो अपने धनकी बढ़तीमेंसे डाला है, परन्तु इसने अपनी घटीमेंसे जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका अर्पण कर दी है।"[४]

---

१. लूका १२।१३–२१। २. मत्ती १९।२९–३०। ३. लूका १४।३३। ४. मरकुस १२।४२–४४।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पीछेवालेसे देना शुरू करो : १४ :

एक आदमीकी दाखकी बारी थी।

एक दिन वह सबेरेसे ही उसके लिए मजदूर खोजने निकल पड़ा।

जो मजदूर मिले, उन्हें दिनभरकी चार पैसे मजदूरी तय करके उसने बगीचेमें भेज दिया।

पहर दिन चढ़े अंगूरके बगीचेका वह मालिक फिर से बाजारमें गया। उसने देखा कि कुछ खाली मजदूर वहाँ अब भी खड़े हैं। उसने उनसे कहा : "तुम लोग भी मेरी दाखकी बारीमें चलकर काम करो। जो मुनासिब मजदूरी होगी, मैं तुम्हें दूँगा।"

दोपहर, तीसरे पहर और जब एक घण्टा दिन बाकी था, तब भी वह बगीचेका मालिक बाजारमें गया और वहाँपर जो बेकार मजदूर खड़े थे, उन्हें काम करनेके लिए उसने अपने बगीचेमें भेज दिया।

शामको जब मजदूरी चुकानेका समय हुआ, तो मालिकने अपने मुनीमसे कहा : "मजदूरोंको मजदूरी बाँट दो। सबको चार-चार पैसे देना है। जो सबसे पीछे आया है, उसीसे देना शुरू करो।"

मुनीमने इसी हिसाबसे बाँटना शुरू किया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने सबसे पीछे आनेवालोंको भी चार-चार पैसे दिये और सबसे पहले आनेवालोंको भी।

जो लोग सबेरेसे आये थे, वे समझते थे कि उन्हें ज्यादा मजदूरी मिलेगी। जब उन्हें भी चार-चार ही पैसे मिले तो वे बड़बड़ाने लगे : "जिन्होंने सिर्फ एक

घण्टा काम किया, उन्हें भी आपने चार पैसे दिये और हम जो सबेरेसे काममें लगे रहे, धूप सहते रहे, उन्हें भी चार ही पैसे !"

मालिक बोला : "मैं तुम्हारे साथ कोई अन्याय तो करता नहीं। सबेरे मैंने तुम्हें चार ही पैसे मजदूरी देनेका वादा किया था न ? अपनी मजदूरी लो और जाओ। मैं तो पीछेवालेको भी उतना ही दूँगा, जितना पहलेवाले-को। अपना पैसा है, मैं चाहे जैसे खर्च करूँ। तुम मुझे बुरी नजरसे क्या इसीलिए देखते हो कि मैं भला हूँ ?"[१]

१. मत्ती २०।१–१६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्याला भीतरसे भी धोओ : १५ :

किसी फरीसीने प्रभुसे विनती की कि मेरे यहाँ भोजन कर। वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा। फरीसीने यह देखकर अचम्भा किया कि भोजन करनेसे पहले वह नहाया नहीं।

प्रभु ईसाने उससे कहा : "ऐ फरीसियो ! तुम प्याले और थालीको ऊपर-ऊपरसे तो माँजते हो, पर तुम्हारे

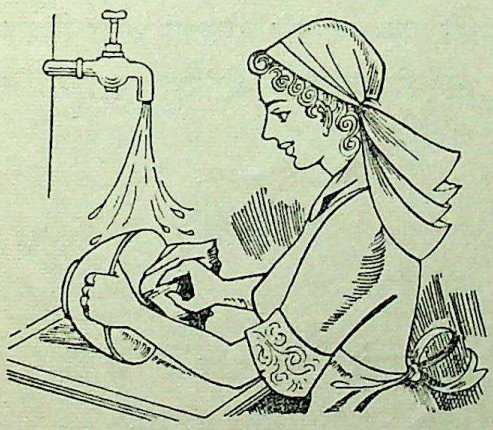

भीतर तो अँधेरा और दुष्टता ही भरी है। हे बेवकूफो, जिसने बाहरका भाग बनाया, उसने क्या भीतरका भाग नहीं बनाया ?"[१]

---

१. लका ११।३७–४०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने ऐबोंपर नजर कर

"किसीपर दोष मत लगा कि तुझपर भी दोष लगाया जाय। तू जिस पैमानेसे दूसरेको नापेगा, उसीसे तू भी नापा जायगा।

तू अपने भाईकी आँखका तिनका देखता है और अपनी आँखका लट्ठा तुझे सूझता नहीं ? जब तेरी ही आँखमें लट्ठा है, तो तू अपने भाईसे कैसे कह सकता है कि ला, मैं तेरी आँखका तिनका निकाल दूँ ?

ऐ कपटी, पहले अपनी आँखका लट्ठा निकाल। तब तू अपने भाईकी आँखका तिनका भलीभाँति निकाल सकेगा।"[१]

दिखावा मत करो :१६:

सावधान ! मनुष्योंको दिखानेके लिए तू धर्मका कोई काम मत कर। नहीं तो स्वर्गमें रहनेवाला तेरा पिता तुझे उसका कुछ भी फल न देगा।[२]

---

१. मत्ती ७।१–५। २. वही, ६।१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विधवाओंको सतानेवाले पादरी

उन पादरियोंसे सावधान रहो, जिन्हें लम्बे-लम्बे चोगे पहने हुए घूमना भाता है, जिन्हें बाजारोंमें नमस्कार और सभाओं तथा जेवनारोंमें मुख्य स्थान अच्छे लगते हैं। वे गरीब विधवाओंके मकान हड़प जाते हैं और दिखावेके लिए घण्टों प्रार्थना करते रहते हैं। वे कड़ा दण्ड भोगेंगे।[१]

बाँया हाथ भी न जाने

जब कभी तू दान करे, तो अपने आगे तुरही मत बजवा, जैसा कि कपटी लोग सभाओं और गलियोंमें

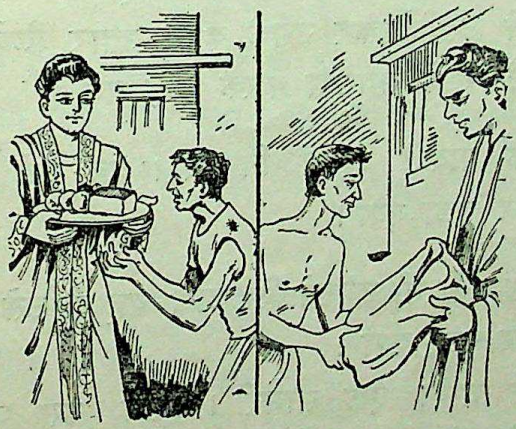

करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुझसे सच कहता हूँ कि वे उसका फल पा चुके।

---

१. लूका २०।४५–४७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परन्तु जब तू दान करे, तो तेरा दाहिना हाथ जो करे, सो तेरा बायाँ हाथ भी न जान सके। ताकि तेरा दान गुप्त रहे और तब तेरा पिता, जो सब कुछ देखता है, तुझे उसका प्रतिफल देगा।[१]

सच्चा पड़ोसी कौन ? : १७ :

प्रभु ईसाने कहा :

"एक आदमी यरूशलमसे यरीहो जा रहा था। डाकुओंने उसे घेरकर उसके कपड़े उतार लिये। उसे मार-पीटकर वे अधमरा करके छोड़ गये।

एक पादरी वहाँसे निकला। वह उसे देखकर कतराकर चला गया।

एक लेवी भी उधरसे निकला। वह भी उसे देखकर कतराकर चला गया।

तब आया एक सामरी। उसने उस घायलको देखा, तो उसे उसपर तरस आया। उसने उसके घावों-पर तेल लगाया। दाखका रस ढालकर पट्टी बाँधी।

---

१. मत्ती ६।२–४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसे अपनी सवारीपर चढ़ाकर सरायमें ले गया और उसने उसकी सेवा-टहल की।

दूसरे दिन उसने चाँदीके दो सिक्के निकालकर भठियारेको दिये और कहा : 'इसकी ठीक ढंगसे सेवा-टहल करना। जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने-पर तुझे भर दूँगा।'

"बता, इन तीनोंमेंसे उस घायलका पड़ोसी कौन ठहरा ?"

वह बोला : "वही, जिसने उसपर दया दिखायी।"

ईसाने कहा : "जा, तू भी ऐसा ही कर।"[१]

१. लूका १०।२९–३७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं भूखा था, तुमने खिलाया नहीं : १८ :

आखिरी फैसलेके दिन ईश्वर भेड़ोंको दाहिनी तरफ रखेगा, बकरोंको बायीं तरफ।

सीधी तरफवालोंसे वह कहेगा : "तुम सब बड़े भाग्यवान् हो। प्रभुका राज्य तुम्हारे लिए ही है। इसलिए कि मैं भूखा था, तो तुमने मुझे खाना दिया। प्यासा था, तो तुमने पानी दिया। परदेशी था, तो तुमने मुझे अपने घरमें ठहराया। नंगा था, तो तुमने मुझे कपड़े पहनाये। जेलमें था, तो तुम मुझसे मिलने आये।"

वे पूछेंगे : "ऐसा हमने कब किया, हे प्रभु ?"

प्रभु कहेगा : "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि यदि तुमने अपने किसी छोटेसे छोटे भाईके साथ भी इनमेंसे कोई व्यवहार किया, तो वह मेरे ही साथ किया।"

बायीं तरफवालोंसे ईश्वर कहेगा : "ऐ अभागे लोगो ! तुम्हें अपने कियेकी सजा भोगनी पड़ेगी। मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना नहीं दिया। मैं प्यासा था, तुमने पानी नहीं पिलाया। मैं परदेशी था, तुमने मुझे जगह नहीं दी। मैं नंगा था, तुमने कपड़ा नहीं दिया। मैं बीमार था, जेलमें था, तुमने मेरी खबर नहीं ली।"

CC-0. Agamnigam Digitized by eGangotri Foundation, Chandigarh.

वे पूछेंगे : "हे प्रभु, ऐसा कब हुआ कि हमने आपको भूखा, प्यासा, नंगा, बेघरका, बीमार या जेलमें देखा हो और आपकी सेवा न की हो ?"

ईश्वर कहेगा : "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अगर तुमने किसी एक आदमीके साथ भी, छोटेसे छोटे आदमीके साथ भी इस तरहकी लापरवाही की, तो वह मेरे साथ की।"

इसके बाद दोनों कियेका फल भोगेंगे।[1]

जो सब जगको खिलाता है ! : १९ :

क्यों इस बातकी चिन्ता करते हो कि हम क्या खायेंगे, क्या पियेंगे, क्या पहनेंगे ? क्या जीवन भोजनसे और शरीर कपड़ोंसे बढ़कर नहीं है ?

आकाशकी चिड़ियोंको देखो। न वे बोती हैं, न काटती, न खत्तोंमें बटोरकर रखती हैं। तो भी स्वर्गमें रहनेवाला तुम्हारा पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम्हारा मूल्य उनसे कुछ भी अधिक नहीं है ?[2]

---

१. मत्ती २५।३१–४६। २. वही, ६।२५–२६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोटी माँगनेपर पिता पत्थर देगा ?

तुममेंसे कौन ऐसा है, जो अपने बेटेके रोटी माँगनेपर उसे पत्थर दे ? मछली माँगे तो साँप दे ? जब तुम बुरे होकर भी अपने बच्चोंको अच्छी चीजें देना चाहते हो, तो स्वर्गमें रहनेवाला तुम्हारा पिता तुम्हें अच्छी चीजें क्यों न देगा ?[१]

तलवारवाले तलवारसे मरेंगे : २० :

प्रभु ईसाको जब पकड़ लिया गया, तो उनके एक साथी पीटरने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींच ली।

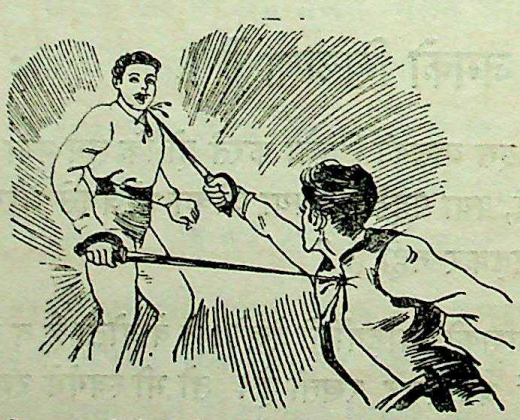

उसने बड़े पादरीके नौकरपर तलवार चलाकर उसका कान उड़ा दिया।

---

१. मत्ती ७।९–११

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ईसाने उससे कहा : "तू अपनी तलवार म्यानमें रख ले, क्योंकि जो लोग तलवार चलाते हैं, वे सब तलवारसे ही नाश किये जायँगे।"[१]

अपराधीको क्षमा करो : २१ :

पतरसने पूछा : "हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या उसे ७ बारतक क्षमा करूँ?"

प्रभु ईसा बोले : "सात बार ही क्यों? सात बारके सत्तर गुनेतक उसे क्षमा करता चल।"[२]

प्रभु तुम्हें क्षमा करेगा

यदि तुम्हारे मनमें किसीके लिए कुछ विरोध हो, तो उसे क्षमा कर दो। इसलिए कि स्वर्गमें रहनेवाला तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा कर दे।[३]

क्षमा चाहता है, तो क्षमा कर

अरे नालायक गुलाम! मैंने तेरा कर्ज तुझे क्षमा कर दिया, क्योंकि तूने उसके लिए मुझसे प्रार्थना की।

---

१. मत्ती २६।५१–५२। २. वही, १८।२१–२२। ३. मरकुस ११।२५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर तू दूसरे गुलामको उसी तरह क्यों क्षमा नहीं करता ? मुझसे क्षमा चाहता है, तो उसे क्षमा कर।

टिकटीपर ईसाकी प्रार्थना

ईसाको जब क्रूसपर, टिकटीपर लटकाया गया, तो उन्होंने परमेश्वरसे प्रार्थना की :

"हे पिता, इन लोगोंको क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं !"

प्रार्थना कैसे करनी चाहिए ? : २२ :

तू ढोंगियोंकी तरह प्रार्थना मत कर। जहाँ दूसरे लोग देख सकें, ऐसी जगहोंपर, सड़कोंके नुक्कड़ोंपर प्रार्थना करना उन्हें भाता है। सच कहता हूँ, उन्हें उसका पुरस्कार मिल गया।

तू प्रार्थनाके लिए अपनी एकान्त कोठरीमें चला जा और दरवाजा बन्द करके परमपिता से प्रार्थना कर। उससे क्या छिपा है ? वह खुलेआम तुझे उसका पुरस्कार देगा।

---

१. मत्ती १८।३२-३३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रार्थनामें दूसरोंकी तरह बार-बार एक ही बातको मत दुहरा । ऐसे लोग शायद ऐसा मानते हैं कि ज्यादा बकबक करनेसे उनकी बात ज्यादा सुनी जायगी ।

उन लोगोंकी तरह बकबक मत कर, क्योंकि तेरा पिता तेरे माँगनेसे पहले ही जानता है कि तुझे क्या क्या चाहिए ।

तो, तू इस तरह प्रार्थना कर :

हे स्वर्गमें रहनेवाले परमपिता, तेरा नाम पवित्र माना जाय । तेरा राज्य पृथ्वीपर छा जाय । जिस तरह स्वर्गमें तेरी इच्छा पूरी होती है, उसी तरह पृथ्वीपर भी हो ।

तू हमारी दिनभरकी रोटी हमें आज दे ।

तू हमारे कर्जोंको क्षमा कर, जैसे हमने अपने देनदारोंको क्षमा कर दिया है । हमें लोभमें मत फँसा, बल्कि हमें बुराईसे बचा । सारा राज्य, सारी सत्ता, सारा यश सदाके लिए तेरा है ।

आमीन ![1]

१, मत्ती ६।५–१४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ४ :

संतों ने कहा है

उदारता और दया : १ :

उदारता सर्वश्रेष्ठ सद्‌गुण है।

यदि मैं मानव और देवदूतकी तरह मीठी वाणी बोलता हूँ और उदारतासे शून्य हूँ, तो मैं पीतलकी झन-झनाहट और करतालकी खनखनाहटके समान हूँ। उदारता नहीं, तो मैं कुछ भी नहीं हूँ।

सहनशीलता और दयाका नाम है—उदारता। उदारता ईर्ष्या, दिखावे, अहंता, दुर्व्यवहार, स्वार्थ, जलन और दुराचरणसे परेकी वस्तु है। वह सत्यसे प्रसन्न रहती है। सबका विश्वास करती है। सबसे आशा रखती है और सबका साथ निबाहती है।[1]

---

१. संत पाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्मल जीवन

: २ :

बड़ी-बड़ी बातें करनेसे कोई आदमी पवित्र और सदाचारी नहीं बन जाता। निर्मल जीवन ही मनुष्यको भगवान्‌का प्यारा बनाता है।

आत्माकी प्यास बड़ी-बड़ी बातोंसे नहीं बुझती। सदाचारी जीवनसे ही मनको शान्ति मिलती है। पवित्र और शुद्ध अन्तःकरण ईश्वरमें हमारे विश्वासको दृढ़ करता है।

यदि तू किसीको खुल्लमखुल्ला पाप करते देखता है, तो तू अपनेको उससे अच्छा समझकर उसकी हँसी मत उड़ा, क्योंकि तू नहीं जानता कि कबतक तू अपनेको सत्कर्मोंमें लगाये रख सकेगा!

जब तू अपनेको ही अपनी इच्छाके अनुकूल नहीं बना पाता, तो दूसरोंसे अपनी इच्छानुसार बन जानेकी आशा कैसे रख सकता है? हम दूसरोंको पूर्ण बनानेकी इच्छा रखते हैं, किन्तु अपने ही दोषोंको दूर नहीं करते!

यदि तेरा हृदय शुद्ध और पवित्र है, तो तू संसारकी सारी चीजोंमें अच्छाईके ही दर्शन करेगा।

सदा सत्कर्ममें लगे रहना और अपनेको तुच्छ अनुभव करना ही नम्र आत्माका लक्षण है।[१]

---

१. टामस केम्पिस : इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बकबक बन्द कर : ३ :

शोरगुल, बकबक और विवादको तू जिस सीमातक छोड़ सके, छोड़ दे। इससे हम बहुत जल्द अशुद्ध हो जाते हैं और अहंकारके मार्गपर फिसल पड़ते हैं।

यदि बोलना ही पड़े, तो ऐसी बातें बोल, जिनसे आत्माकी उन्नति होती है।

यदि हम दूसरोंके उन कामों और बातोंकी आलोचनाके फेरमें न पड़ें, जिनका हमसे कोई सम्बन्ध नहीं है, तो हमें काफी शान्ति मिलेगी।

बातचीत शुरू होनेपर व्यर्थ ही शब्दोंका अपव्यय रोकनेकी अपेक्षा मनुष्यके लिए मौन धारण कर लेना सदा ही अधिक सरल है।[१]

---

१. टामस केम्पिस : इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शान्ति कैसे मिले ?

: ४ :

शान्ति और मुक्तिका मार्ग यह है :

१. तू अपनी इच्छाकी अपेक्षा दूसरोंकी इच्छा पूरी करनेका अभ्यास कर ।

२. अधिककी अपेक्षा थोड़ेसे ही संतुष्ट होना सीख ।

३. सदा छोटे स्थानकी खोज कर और छोटा बन ।

४. सदा यह इच्छा और प्रार्थना कर : "प्रभुकी इच्छा मेरे द्वारा पूर्ण हो ।"

मनुष्योंके मुँहमें तेरी शान्ति क्यों बँधी रहे ? उनके निन्दा-यशपर तेरी शान्ति क्यों निर्भर रहे ? वे अच्छा कहें या बुरा, इससे तू दूसरा आदमी तो बन नहीं जायगा । तू जो है, वही रहेगा । इसलिए विचार कर कि सच्ची शान्ति और विभूतिका स्रोत कहाँ है ? क्या मैं नहीं ?

जो मनुष्यको प्रसन्न करनेकी इच्छा नहीं रखता, न उसके असंतोषसे डरता है, वही शान्ति पाता है ।[१]

---

१. टामस-केम्पिस : इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुःखोंका स्वागत : ५ :

अच्छा है कि हमपर कष्टों और मुसीबतोंका कभी-कभी बोझ पड़े। इनसे आदमीको आत्मचिन्तनका मौका मिलता है।[1]

मेरे लिए विपत्तिमें रहना अच्छा है। मैं विपत्तिमें स्वस्थ रहता हूँ, क्योंकि परमेश्वरने मेरे लिए इसीका विधान किया है। ईश्वरने हमारे लिए उसी स्थितिकी व्यवस्था की है, जो हमारे लिए सर्वथा उचित है।[2]

मुझे ऐसा लगता है कि केवल दुःखोंको सहनेके लिए ही मुझे जीवित रहना चाहिए। मैं बड़े प्रेमसे ईश्वरसे दुःखकी ही याचना करती हूँ।[3]

---

१. टामस केम्पिस। २. संत आगस्ताइन। ३. कुमारी टेरेसा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सच्चा बुद्धिमान कौन ? : ६ :

सच्चा बुद्धिमान् वही है, जो भगवान्‌को पानेके लिए संसारी वस्तुओंको बदबूदार गोबरकी तरह छोड़ देता है।

यदि तूने संसारकी सभी वस्तुओंको देख लिया, तो भी वह दर्शन असारके सिवा और क्या है ? सबसे ऊँचे बैठे हुए भगवान्‌की ओर आँख उठाकर देख और प्रार्थना कर कि वह तेरे पापों और गलतियोंको क्षमा करे। असार लोगोंको असार चीजोंमें व्यस्त रहने दे। तू तो भगवान्‌की आज्ञापर चल।

मृत्युसे भागनेकी अपेक्षा पापसे भागना कहीं अच्छा है।[१]

---

१. टामस केम्पिस : इमिटेशन ऑफ क्राँइस्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे प्रेमका बीज बोने दे ! : ७ :

भगवन्, दया करके मुझे वह शक्ति दे कि किसीको मेरी सान्त्वनाकी आवश्यकता ही न पड़े ।

लोग मुझे समझें, इसके बजाय मैं ही उनको समझूँ ।

लोग मुझे प्यार करें, इसके पहले मैं ही उन्हें प्यार करूँ ।

हमें वही मिलता है, जो दिया जाता है ।
क्षमा करनेसे ही मनुष्य क्षमाका पात्र बनता है ।
अपनेको उत्सर्ग कर देनेसे ही नित्य जीवन मिलता है ।

—संत फ्रांसिस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रभु, मुझे अपना यन्त्र बना ! : ८ :

हे प्रभु, मुझे अपनी शान्तिका एक यन्त्र बना :
जहाँ घृणा है, वहाँ मैं प्रेम ला सकूँ।
जहाँ आक्रमण है, वहाँ मैं क्षमा ला सकूँ।
जहाँ मतभेद है, वहाँ मैं मेल-मिलाप ला सकूँ।
जहाँ भूल है, वहाँ मैं सचाई ला सकूँ।
जहाँ संदेह है, वहाँ मैं विश्वास ला सकूँ।
जहाँ निराशा है, वहाँ मैं आशा ला सकूँ।
जहाँ अन्धकार है, वहाँ मैं प्रकाश ला सकूँ।
जहाँ उदासी है, वहाँ मैं प्रसन्नता ला सकूँ।[१]

—संत फ्रांसिस

---

१. आर० व्हिटवैल : सेण्ट फ्रांसिस ऑफ असाइसी, अध्याय १३।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Let me bring Love

Lord, make me an instrument of Thy peace,
Where there is hate, that I may bring love;
Where there is offence, that I may bring pardon;
Where there is discord, that I may bring union;
Where there is error, that I may bring truth;
Where there is doubt, that I may bring faith;
Where there is despair, that I may bring hope;
Where there is darkness, that I may bring Light;
Where there is sadness, that I may bring joy.

—Saint Francis

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

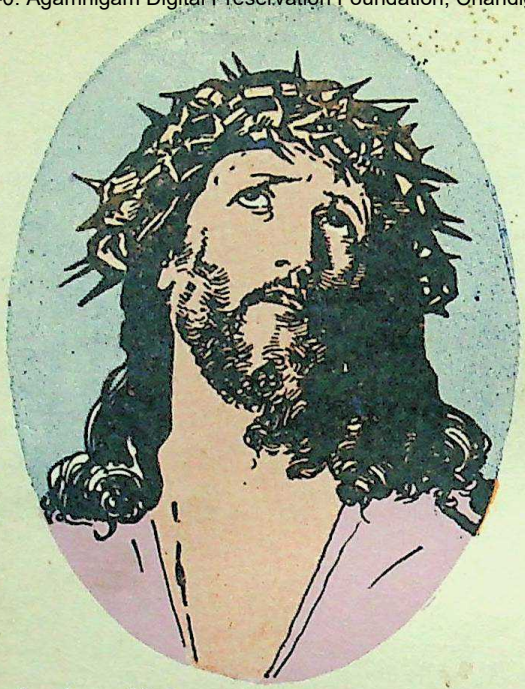

Heal the Sick, Cleanse the Lepers,
Raise the Dead, Cast out Devils,
Freely Ye have received, Freely Give.

MATTHEW 10 : 7-8

बीमारोंको चंगा करो, कोढ़ियोंकी सफाई करो,
मुर्दोंको उठाओ, दुष्टोंको निकालो,
खुले हाथसे तुम्हें मिला है, खुले हाथसे दो।

—ईसा

सर्व-सेवा-संघ
प्रकाशन
राजघाट · वाराणसी